हिंदी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का इतिहास 4 कालों में विभक्त किया गया है-

1. आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)
2. पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)
3. उत्तर मध्य काल (1650 ई. - 1850 ई.)
4. आधुनिक काल (1850ई. - वर्तमान)

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

आदिकाल का नामकरण आचार्यों के अनुसार इस प्रकार किया गया-

जॉर्ज ग्रियर्सन	-	चारण काल
मिश्र बंधु	-	प्रारंभिक काल
डॉ. रामचंद्र शुक्ल	-	आदिकाल: वीरगाथा काल
राहुल सांकृत्यायन	-	सिद्ध-सामंत काल
हजारी प्रसाद द्विवेदी	-	आदिकाल

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

विशेषताएँ-

- धार्मिकता
- वीरगाथा तत्व
- श्रृंगारिकता

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

प्रकार-

- **प्रबन्ध काव्य - रासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका।**
- **मुक्तक काव्य -खुसरो की पहेलियाँ, सिद्ध-नाथों की रचनाएँ, विद्यापति की पदावली।**

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

रासो-काव्य को 3 वर्गों में बाँटा जाता है-

1. वीर गाथात्मक रासो काव्य:- पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो, हम्मीर रासो, परमाल रासो।
2. श्रृंगारपरक रासो काव्य:- बीसलदेव रासो, मुंज रासो, सन्देश रासक।
3. धार्मिक व उपदेशमूलक रासो काव्य:- चंदनबाला रास, स्थूलिभद्र रास, उपदेश रसायन रास।

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- पृथ्वीराज रासो - चंदबरदाई
- परमाल रासो - जगनिक
- खुमाण रासो - दलपति विजय
- दोहाकोष - सरहपा
- चर्या पद - शबरपा
- कान्हपाद गीतिका - कण्हपा

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह
- पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, लिखनावली - विद्यापति
- पउम चरिउ - स्वयंभू
- सबदी, पद, प्राण संकली, सिष्या दासन - गोरखनाथ

आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- उपदेश रसायन रास - जिन दत्त सूरी
- चन्दनबाला रास - आसगु
- स्थूलिभद्र रास - जिनधर्म सूरी
- भारतेश्वर बाहुबली रास - शालिभद्र सूरी
- जय मयंक जस चन्द्रिका - मधुकर
- जयचंद प्रकाश - भट्ट केदार

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

- इसे भक्तिकाल भी कहते हैं।
- इसे हिंदी साहित्य का 'स्वर्णकाल' भी कहा जाता है।
- भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं

1. सगुण काव्य-धारा
2. निर्गुण काव्य-धारा

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

- सगुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ है-

1. रामाश्रयी शाखा (राम भक्ति शाखा)

   - तुलसीदास

2. कृष्णाश्रयी शाखा (कृष्ण भक्ति शाखा)

   - सूरदास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

- निर्गुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ है-

1. ज्ञानाश्रयी शाखा (संत काव्य)
   - कबीर
2. प्रेमाश्रयी शाखा (सूफी काव्य)
   - मलिक मुहम्मद जायसी

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

राम भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- **रामचरित मानस, विनय पत्रिका,**
  गीतावली, कवितावली, दोहावली,
  कृष्ण दोहावली, पार्वती मंगल, - तुलसीदास
  जानकी मंगल, बरवै रामायण,
  रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी,
  रामलला नहछू

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

राम भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- रामचंद्रिका - केशवदास
- पौरुषेय रामायण - नरहरिदास
- भक्तमाल - नाभादास
- भरत मिलाप, अंगद पैर - ईश्वरदास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

कृष्ण भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी - सूरदास
- परमानंद सागर - परमानंद दास
- जुगलमान चरित - कृष्णदास
- रास पंचाध्यायी - नंददास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

कृष्ण भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- द्वादशयश, भक्तिप्रताप, हितजू को मंगल - चतुर्भुज दास
- फुटकर पद - कुम्भनदास
- फुटकर पद - छीत स्वामी
- फुटकर पद - गोविन्दस्वामी

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

कृष्ण भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- नरसी जी का मायरा,
  गीत गोविन्द टीका, राग गोविन्द - मीराबाई
- प्रेम वाटिका, सुजान रसखान,
  दानलीला - रसखान
  (सैयद इब्राहिम)
- हित चौरासी - हित हरिवंश
- सुदामा चरित - नरोत्तम दास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

संत काव्य या ज्ञानाश्रयी भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- बीजक, रमैनी, सबद, साखी - कबीरदास (संकलन - धर्मदास)
- बानी - रैदास
- ग्रन्थ साहिब के पद - नानकदेव
- सुन्दर विलाप - सुन्दरदास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

सूफी काव्य या प्रेममार्गी भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- पद्मावत, आखिरी कलाम, अखरावट, कन्हावत - मलिक मुहम्मद जायसी
- मधुमालती - मंझन
- मृगावती - कुतुबन
- चित्रवती - उस्मान

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

सूफी काव्य या प्रेममार्गी भक्ति काव्य के प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- हंसावली - असाइत
- चंदायन - मुल्ला दाऊद
- ज्ञान दीपक - शेख नबी
- इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी - नूर मुहम्मद
- रूप मंजरी - नंददास

पूर्व मध्य काल(1350 ई.- 1650ई.)

अष्टछाप के कवि –

- सूरदास
- परमानंद दास
- कुंभनदास
- कृष्णदास
- नंददास
- चतुर्भुजदास
- गोविन्द स्वामी
- छीतस्वामी

उत्तर मध्य काल (1650 ई. - 1850 ई.)

- इसे रीतिकाल भी कहा जाता है।
- मिश्र बंधु ने "अलंकृत काल", आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने "रीतिकाल", विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने "श्रृंगार काल" नाम दिया।

उत्तर मध्य काल (1650 ई. - 1850 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- रसिकप्रिया, कविप्रिया, नखशिख,
  छंदमाला, रामचंद्रिका,
  वीरसिंहदेव चरित, - केशवदास
  रतनबावनी, विज्ञानगीता,
  जहाँगीर जसचंद्रिका

उत्तर मध्य काल (1650 ई. - 1850 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- कविकुल कल्पतरु, रस विलास, काव्य विवेक, श्रृंगार मंजरी, छंद विचार - चिंतामणि
- रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी - मतिराम
- काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय - भिखारी दास
- बिहारी सतसई - बिहारी

उत्तर मध्य काल (1650 ई. - 1850 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- सुजान हित प्रबंध, इश्कलता, प्रीति पावस, पदावली घनानंद
- ठाकुर ठसक - ठाकुर
- शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक - भूषण
- स्फूट छंद - गिरिधर कविराय
- शब्द रसायन, काव्य रसायन, भाव विलास, भवानी विलास - देव

आधुनिक काल (1850ई. - वर्तमान)

- भारतेन्दु युग -(1850 ई. - 1900 ई.)
- द्विवेदी युग -(1900 ई. - 1920 ई.)
- छायावाद युग -(1918 ई. - 1936 ई.)
- छायावादोत्तर युग -(1936 ई. के बाद)
  - ✓ प्रगतिवाद -(1936 ई. से ...)
  - ✓ प्रयोगवाद -(1943 ई. से ...)
  - ✓ नयी कविता (अकविता) -(1951 ई. से ...)

भारतेन्दु युग -(1850 ई. - 1900 ई.)

- प्रतिनिधि कवि- भारतेंदु हरिश्चंद्र
- भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ-
  - ✓ नवजागरण
  - ✓ सामाजिक चेतना
  - ✓ भक्ति भावना
  - ✓ श्रृंगारिकता
  - ✓ रीति निरूपण
  - ✓ समस्या-पूर्ति

भारतेन्दु युग -(1850 ई. - 1900 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- प्रेम मालिका, प्रेम फुलवारी, गीत गोविंदानंद, वर्षा विनोद, विनय प्रेम पचासा, दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा (खड़ी बोली में)

  - भारतेंदु हरिश्चंद्र

- जीर्ण जनपद, मयंक महिमा, हार्दिक हर्षादर्श, आनंद अरुणोदय

  - बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन'

- मन की लहर, लोकोक्ति शतक, श्रृंगार विलास, दंगल खंड

  - प्रताप नारायण मिश्र

द्विवेदी युग -(1900 ई. - 1920 ई.)

- प्रतिनिधि कवि- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
- भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ-
  - ✓ जागरण सुधार
  - ✓ सोद्देश्यता
  - ✓ आदर्श परक सचना
  - ✓ इतिवृत्तात्मकता
  - ✓ आधुनिकता
  - ✓ समस्या-पूर्ति

द्विवेदी युग -(1900 ई. - 1920 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- काव्य मञ्जूषा, सुमन, कान्यकुब्ज, अबला विलाप - महावीर प्रसाद द्विवेदी
- प्रियप्रवास, पद्यप्रसून, चुभते चौपदे, वैदेही वनवास - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत-भारती, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णुप्रिया - मैथिली शरण गुप्त

छायावाद युग -(1918 ई. - 1936 ई.)

- प्रतिनिधि कवि- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा
- छायावाद युग को आचार्यों ने "रहस्यवाद, अन्योक्ति पद्धति, शैली वैचित्र्य, आध्यात्मिक छाया का भान, स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह" आदि कई नाम दिए

छायावाद युग -(1918 ई. - 1936 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छवास, बभ्रुवाहन, कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय;
  आँसू, झरना, कामायनी (छायावादी काव्य)
  - जयशंकर प्रसाद
- युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, लोकायतन;
  उच्छवास, ग्रंथि, वीणा, पल्लव, गुंजन (छायावादी काव्य)
  - सुमित्रानंदन पन्त

छायावाद युग -(1918 ई. - 1936 ई.)

प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार-

- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत (संकलन का नाम – यामा)
  - महादेवी वर्मा
- अनामिका, परिमल, गीतिका, राम की शक्ति पूजा
  - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, आकाशगंगा, राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष
  - रामकुमार वर्मा

छायावाद युग -(1918 ई. - 1936 ई.)

इसी समय कुछ और कवि राष्ट्रवादी सांस्कृतिक काव्यधारा में अपनी रचनाएँ कर रहे थे -

- कैदी और कोकिला, हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिनी, पुष्प की अभिलाषा
  - माखन लाल चतुर्वेदी
- त्रिधारा, मुकुल, खूब लड़ी मर्दानी, वीरों का कैसा हो वसंत
  - सुभद्रा कुमारी चौहान